मनुष्य के जीवन में उसके द्वारा बोली गई वाणी ही उसे प्रिय या अप्रिय बनाती है। मधुर वाणी बोलने वाला व्यक्ति सभी को प्रिय लगता है और वहीं दूसरी तरफ किसी मनुष्य में अपार गुण होते हुए भी यदि उसकी वाणी में मधुरता नहीं है तो वह किसी को भी पसंद नहीं आता। इसे हम कौवा और कोयल के उदाहरण के द्वारा अच्छी तरह से समझ सकते हैं। क्योंकि दोनों का स्वरूप देखने में तो एक समान ही है परंतु वाणी में दोनों के गुणों की पहचान हो जाती है। कोयल सबको प्रिय लगती है क्योंकि उसकी वाणी में मधुरता होती है और कौआ सबको अप्रिय लगता है क्योंकि उसकी वाणी मैं करकसता होती है।

"कौए की कर्कश आवाज़ और कोयल की मधुर वाणी को सुन।
सभी जान जाते है, दोनों के गुण।"

1.

मानव अपनी मधुर वाणी से शत्रु को भी अपना मित्र बना लेता है मधुर वचनों को बोलने से बोलने वाले को तथा सुनने वालों को दोनों को ही शांति एवं मन में आनंद की अनुभूति प्राप्त होती है भाई सारे का वातावरण बना रहता है तथा मानव समाज में प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त कर पाता है हमारे भारतवर्ष में विद्वानों और कवियों ने भी मधुर वचन को औषधि की संज्ञा दी है। इसीलिए प्रत्येक मनुष्य को अहंकार और क्रोध का त्याग करके मीठी वाणी बोलकर सबका मन हरना चाहिए।

2.